डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B. A. Part- II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - III

Date:- 15-02-2022

'प्रेमचंद का उपन्यास-साहित्य'

युग निर्माता प्रेमचंद का साहित्य विविधताओं से परिपूर्ण है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, बाल-कथाओं, सम्पादकीय लेख, समीक्षा आदि लगभग सभी क्षेत्रों में अपने हाथ आजमाए और लगभग सभी में सफलता पाई।

जिस समय प्रेमचंद ने उपन्यास लेखन में अपना पदार्पण किया उस समय अय्यारी एवं तिलिस्म से भरपूर उर्दू उपन्यासों की भरमार थी। इनमें देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास सर्वप्रसिद्ध थे। हालांकि प्रेमचंद ने भी अपने लिए एक अलग ही क्षेत्र चुना। जिसमें उन्होंने भारतभूमि से जुड़े यथार्थ पात्रों को अपने उपन्यासों में प्रधान स्थान दिया। भारत के गली-कूचों एवं गाँवों को अपने उपन्यास का मंच बनाया जो कि अपने आप में उस काल में एक मौलिक प्रयोग था।

प्रेमचंद ने अपने आरम्भिक उपन्यासों, मुख्य रूप से सामाजिक समस्याओं यथा-धार्मिक आडम्बर, विधवा-विवाह, वेश्यावृत्ति आदि के प्रश्नों को उठाया। उन्होंने पहले उर्दू उपन्यास (जिसका लेखन 1903 में शुरू हुआ और 1905 में पूरा हुआ) 'असरारे मआविद (देवस्थान रहस्य)' में तीर्थ स्थलों और मंदिरों में व्याप्त भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति एवं स्त्रियों के त्रियाचरित्र का उद्घाटन किया। दूसरे उपन्यास 'हमखुर्मा-ओ-हमसवाब' (1906) में

Scanned by CamScanner